आस्नातकप्रथमखण्ड (सामान्य/प्रतिष्ठा) 16.7.2020

अनि० प्रथमपत्र को०-कृत व्याकरण) कारकप्रकरण

अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति)

सूत्र- ध्रुवमपायेऽपादानम् - अपाय में अर्थात् पृथक् या अलग होने में जिस निश्चित वस्तु से कोई वस्तु अलग होती है वह अपादान कारक तथा उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है।
यथा- वृक्षात् पर्णानि पतन्ति - वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।

सूत्र- अपादाने पञ्चमी- अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है।
वृक्षात् पर्णानि पतन्ति - वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।
सः ग्रामात् आयाति - वह गाँव से आता है।
रामः प्रासादात् पतति - राम छत से गिरता है।

सूत्र- भीत्रार्थानां भयहेतुः - भय और त्राण अर्थवाले धातुओं के योग में जिससे भय हो, उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है।
यथा- सः सिंहात् बिभेति - वह सिंह से डरता है।
अयं चौरात् त्रायते - यह चोर से बचाता है।

सूत्र- आख्यातोपयोगे - नियमपूर्वक जिससे विद्या ग्रहण की जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है तथा उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा -
देवदत्तः गुरोः अधीते - देवदत्त गुरु से पढ़ता है।
अयं छात्रः शिक्षकात् पठति - (यह छात्र शिक्षक से पढ़ता है।)

सूत्र- वारणार्थानामीप्सितः - वारण का अर्थ है निवारण करना, रोकना, प्रवृत्ति को रोक देना। वारण अर्थवाले धातुओं के प्रयोग में ईप्सित वस्तु की अपादान संज्ञा होती है तथा उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा - गुरुः शिष्यम् अज्ञानात् वारयति।
(गुरु शिष्य के अज्ञान को दूर करते हैं।)
यवेभ्यो गां वारयति क्षेत्रे - खेत में जौ (यव) से गाय को रोकता है।

→

सूत्र - पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् — पृथक्, विना और नाना शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति विकल्प से होती है।

यथा - पृथक् - आत्मनः पृथक् नास्ति परमात्मा (आत्मा से अलग परमात्मा नहीं है)

विना - धर्मात् विना सुखं न मिलाति (धर्म के बिना सुख नहीं मिलता है)

नाना - नाना फलेभ्यः फलति कल्पलतेव विद्या - (विद्या कल्पलता के समान नाना फल देती है।)

सूत्र - भुवः प्रभवः — भू धातु के योग में प्रभव (उत्पत्ति-स्थान) अपादान कारक होता है। यथा —

हिमालयाद् गङ्गा प्रभवति - हिमालय से गङ्गा निकलती है।

सूत्र - पञ्चम्यपाङ्परिभिः (आङ् मर्यादावचने) — अप, आङ् एवं परि उपसर्ग के योग में जहाँ तक मर्यादा एवं तक अर्थ में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा —

आविद्यालयात् गच्छति - (विद्यालय तक जाता है)

अपविष्णोः संसारोऽस्ति - विष्णु को छोड़कर संसार है।

आमूलात् श्रोतुमिच्छामि - प्रारम्भ से पढ़ना चाहता हूँ।

सूत्र - "पराजेरसोढः" — परा उपसर्ग के साथ जि धातु के प्रयोग होने पर, असह्य होता है, उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा — सः अध्ययनात् पराजयते (वह अध्ययन से पराजित होता है)

धर्मात् अधर्मः पराजयते /
धर्म से अधर्म पराजित होता है।

सुरेश पाण्डेय
प्रधानाचार्य
सि० नं० महाविद्यालय
पचरुखिया, भोजपुर
दिनांक 16.7.2020